भोपाल। मध्यप्रदेश में विधान सभा चुनाव के बाद अब मतगणना का इंतजार है और इस बीच भाजपा और कांग्रेस के बीच कड़ी चुनावी टक्कर के कयास लगाए जा रहे हैं, लेकिन यह तय है कि प्रदेश में जो भी दल दूसरे की अपेक्षा दो से पांच प्रतिशत तक अधिक मत प्राप्त करेगा वही सत्ता पाएगा।

मध्यप्रदेश में पिछले सात बार के चुनावी आंकड़ों पर गौर करें तो पता चलता है कि कांग्रेस और भाजपा के बीच मतों का अंतर दो बार को छोड़कर कभी भी छह प्रतिशत से अधिक नहीं रहा, जबकि अन्य दल और निर्दलीय उम्मीदवार लगभग 20 प्रतिशत तक मत लेकर चुनावी गणित गड़बड़ाते रहे हैं।

वर्ष 1977 में जनता पार्टी भारी बहुमत से सत्ता में आई थी लेकिन आपसी खींचतान के चलते जनता का मोह जल्दी ही उससे भंग हो गया और वर्ष 1980 में हुए विधान सभा चुनाव में अविभाजित मप्र में कांग्रेस ने 47.51 मत प्राप्त कर दो तिहाई बहुमत से सरकार बनाई थी जबकि भाजपा को 30.34 प्रतिशत मत मिले थे और अन्य दल एवं निर्दलियों ने 22.15 प्रतिशत मतों पर कब्जा किया था।

इसी प्रकार वर्ष 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की शहादत के बाद वर्ष 1985 में हुए विधान सभा चुनाव में एक बार फिर कांग्रेस सरकार बनाने में सफल रही और उसे 48.57 प्रतिशत मत मिले जबकि भाजपा 32.47 प्रतिशत मत ही प्राप्त कर सकी। इस चुनाव में अन्य दल एवं निर्दलीय 18.96 मत प्राप्त कर सके थे।

पिछले सात चुनाव में वर्ष 1980 एवं 1985 के चुनाव ही ऐसे रहे जब दो प्रमुख दलों के बीच मतों का अंतर क्रमशः 17.17 एवं 16.10 प्रतिशत रहा जबकि अन्य चुनाव में यह अंतर छह प्रतिशत से अधिक नहीं रहा।

वर्ष 1990 में केन्द्र में राजीव गांधी के खिलाफ बोफोर्स कांड के चलते कांग्रेस के प्रति नाराजगी का असर मप्र में भी दिखाई पड़ा और वर्ष 1985 में 48.57 प्रतिशत मत प्राप्त करने वाली कांग्रेस 33.49 प्रतिशत मत प्राप्त कर सत्ता से बाहर हो गई, जबकि भाजपा पहली बार 39.12 प्रतिशत मत प्राप्त कर पहली बार स्वयं के बूते सत्ता में आने में सफल रही। इस वर्ष अन्य दल एवं निर्दलीय 26.39 मत प्राप्त कर सके थे।

छह दिसंबर 1992 को बाबरी ढांचा ढहाये जाने के बाद उपजे दंगों के चलते भाजपा सरकार को भंग कर दिया गया तथा इसके बाद भाजपा को पूरा भरोसा था कि सहानुभूति मतों के चलते वह दोबारा सत्ता पाने में सफल होगी लेकिन वर्ष 1993 में हुए विधान सभा चुनाव में कांग्रेस भाजपा से दो प्रतिशत अधिक मत पाने में सफल रही और सत्ता में आ गई।

वर्ष 1993 में कांग्रेस को 40.79 प्रतिशत मत मिले जबकि भाजपा 38.82 प्रतिशत मत प्राप्त कर सत्ता से बाहर हो गई। अन्य दल एवं निर्दलियों को 20.39 प्रतिशत मत मिले।

वर्ष 1998 में भी यही कहानी दोहराई गयी तथा सवा प्रतशित मतों के अंतर से कांग्रेस □क बार फरि सत्ता में आने में कामयाब रही थी□ इस वर्ष कांग्रेस को 40.79 प्रतशित मत मलि जबक‍ि भाजपा को 38.82 मत ही मलि सके□ अन्य दल □वं नरि्दलयिों ने 20.39 प्रतशित मत प्राप्त कर भाजपा का गणति पूरी तरह गडबडा दयि‍ा□

कांग्रेस के दस वर्षों के शासनकाल के दौरान बजिली पानी □वं स□क की समस्याओं से परेशान प्रदेश की जनता ने □क बार फरि भाजपा में अपना भवषि्य देखा और दो तहिाई बहुमत दयि‍ा□ उस समय भाजपा को जहां 42.50 प्रतशित मतदाताओं ने अपना समर्थन दयि‍ा वहीं कांग्रेस का मत प्रतशित 37.70 ही रह सका जबक‍ि अन्य दल □वं नरि्दलीय 19.80 प्रतशित मत प्राप्त कर सके□

वर्ष 2008 में भी भाजपा के मतों में लगभग पांच प्रतशित की गरिावट आई लेकनि वह कांग्रेस से लगभग पांच प्रतशित अधकि मत प्राप्त कर □क बार फरि सत्ता में आने में कामयाब रही□ इस वर्ष भाजपा को जहां 37.70 प्रतशित मत मलि वहीं कांग्रेस को 32.40 मत प्राप्त कर सत्ता से बाहर बैठना पडा□ इस चुनाव में अन्य दल □वं नरि्दलीयों ने अपने मतों के प्रतशित में बढोत्तरी करते हु□ 29.90 प्रतशित मत प्राप्त की□ □

अब इस साल 25 नवंबर को वधिान सभा के लि□ मतदान होने के बाद आठ दसिंबर को मतों की गनिती होने वाली है और पछिले चुनाव परणिामों को देखते हु□ यह कहा जा सकता है क‍ि जो भी दल दूसरे के मुकाबले दो से पांच प्रतशित अधकि मत प्राप्त करेगा वही सत्ता का सुख भोगेगा□

(भाषा)